इन्स्टलेशन कला

शेफाली जैन

इन्स्टलेशन कला की अनुभूति के लिए सभी इन्द्रियों का इस्तेमाल ज़रूरी होता है। इसलिए इसे महसूस करने के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि तुम इसके सामने खुद मौजूद हो। पर चूँकि मैं तुम्हें यह इन्स्टलेशन चित्र और शब्दों के माध्यम से दिखा रही हूँ और तुम इसके सामने फिलहाल मौजूद नहीं हो, इसलिए इसकी अनुभूति के बारे में मैं तुम्हें अपने खुद के अनुभव के सहारे समझाने की कोशिश करती हूँ।

मैंने इस आर्टवर्क को कई साल पहले एमएस यूनिवर्सिटी, वड़ोदरा में देखा था। तब मैं वहाँ कला की पढ़ाई कर रही थी। हर साल मई महीने में सभी विद्यार्थी मिलकर एक प्रदर्शनी का आयोजन करते थे जिसमें वे अपने-अपने आर्टवर्क प्रस्तुत करते थे। ऐसी ही एक प्रदर्शनी के दौरान मेरा इस आर्टवर्क से परिचय हुआ और भावसिंह से भी। 'पर्सनल टच' नामक ये आर्टवर्क मेरे लिए उस समय एक नई अनुभूति था। इसे देखकर मैं थोड़ा असमंजस में पड़ गई थी। यह क्या? तीन छोटे डिब्बे जिनमें एक तरफ गोलाकार खिड़कियाँ कटी हुई हैं जिन पर काला पर्दा है। इसके अलावा कुछ खास दिखाई नहीं दे रहा था। डिब्बों के पास एक नोट लिखा था – "डिब्बों के अन्दर हाथ डालें और महसूस करें।" पहले तो मैं थोड़ा सहम गई। पता नहीं क्या होगा अन्दर! आखिर में मेरी जिज्ञासा मेरे डर से ज़्यादा बढ़ गई और मैंने पहले डिब्बे की गोल खिड़की के अन्दर हाथ डाल दिया। ओह! हाथ डालते ही मैंने उसे एकदम वापस खींच लिया। अन्दर कुछ ठण्डापन, गीलापन और लिसलिसापन-सा महसूस

चित्र में दिखाई दे रहा इन्स्टलेशन (संस्थापन कला) भावसिंह भांभाणिया ने बनाया है।

हुआ – जैसे मैंने किसी छिपकली या फिर ऐसे ही किसी जीव की चमड़ी छू ली हो ! मैं इस डिब्बे को छोड़ दूसरे डिब्बे की तरफ बढ़ी। उसमें हाथ डाला तो कुछ गोलाकार, दरदरा और चुभता-सा महसूस हुआ। तीसरे में कुछ ऊबड़खाबड़, खुरदुरा और ठण्डा महसूस हुआ। अब मैं मन ही मन इन एहसासों को अपने पुराने अनुभवों में ढूँढने लगी। क्या यह फलाना चीज़ हो सकती है? क्या इसका एहसास मेरे किसी और अनुभव से मेल खाता है?

मैंने एक बार फिर से तीनों डिब्बों में हाथ डालकर देखा। अब मेरी शुरुआती हिचकिचाहट दूर हो चुकी थी तो मैं कुछ देर तक इन चीज़ों को छूकर महसूस करती रही। और फिर कुछ-कुछ अन्दाज़ा मिलने लगा। दूसरे डिब्बे में शायद एक साबुत नारियल था, छिलके समेत। तीसरे में तो पक्का फूल गोभी ही थी पर पहले में क्या था वह मैं बूझ नहीं पाई।

खैर, यह था मेरा अनुभव। और ये रहे, इस अनुभव से उठे दो सवाल।

- क्या कला केवल आँखों से देखकर पहचानने के लिए है?
- क्या कला का मकसद केवल कुछ जानी-मानी या फिर जानी-पहचानी बातों या चीज़ों को नए रूपों में साझा करना है या फिर दर्शकों के विचारों को टटोलना और उनके मन में सवाल खड़े करना भी है?

यह दो प्रश्न कला के इतिहास में पहले भी पूछे जा

इन्स्टलेशन कला का एक ऐसा रूप है जिसकी अनुभूति सिर्फ देखने पर निर्भर नहीं होती। इन्स्टलेशन कला ध्वनियों, दृश्यों, गन्धों, स्वाद, वस्तुओं और अनुपस्थितियों को भी अपना हिस्सा बना सकती है। कलाकार इन सब या फिर इनमें से कुछ चीज़ों के माध्यम से एक अनुभव का निर्माण करते हैं और इस तरह तैयार होती है इन्स्टलेशन कला। इन्स्टलेशन में एक और चीज़ जुड़ सकती है – स्थान। इन्स्टलेशन के मायने केवल कलाकार द्वारा प्रस्तुत की गई चीज़ों से ही नहीं, बल्कि ये चीज़ें जिस स्थान पर रखी गई हैं उससे भी ताल्लुक रखते हैं। स्थान बदल जाने पर इस कला के मायने भी बदल सकते हैं।

चुके हैं और इनके कारण कला ने अपने रूप और अपनी सीमाएँ भी बदली हैं। इन्स्टलेशन कला कुछ ऐसे ही सवालों के जवाब के रूप में पैदा हुई।

भावसिंह के आर्टवर्क में कुछ चीज़ें मैं छूकर पहचान पाई। पर कुछ नहीं पहचान पाई। लेकिन अगर कला का मकसद प्रस्तुति को केवल पहचानना नहीं है, तो फिर शायद भावसिंह अपने आर्टवर्क को मेरी आँखों से छुपाकर मुझे मेरी दूसरी इन्द्रियों का इस्तेमाल करने की तरफ मोड़ रहे हैं। शायद वे मुझे सोचने पर मजबूर कर रहे हैं कि हम इस दुनिया को आँखों के सिवा और कई तरीकों से देखते हैं – छूकर, सूँघकर, स्वाद लेकर, कल्पना करके, विचार करके आदि। एक और बात मेरे ज़ेहन में रह गई। यह आर्टवर्क अनुभव करने के बाद अगली बार जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति से मिलूँ जो आँखों से नहीं देख पाता हो तो शायद मैं उसके देखने के तरीकों पर गौर करूँ, बजाय इसके कि उसके न देख पाने का दुख ज़ाहिर करूँ। मज़े की बात तो यह है कि भावसिंह का आर्टवर्क उन लोगों के लिए भी बना है जो आँखों से नहीं, बल्कि दूसरी इन्द्रियों से दुनिया देखते हैं।

यह आर्टवर्क हमें कला प्रदर्शनियों के बारे में भी फिर से सोचने पर मजबूर करता है। क्या कला प्रदर्शनियाँ केवल उन लोगों के लिए होती हैं जो आँखों से देख पाते हैं? अगर नहीं, तो हमें सोचना होगा कि हम किस-किस तरह की अनुभूतियों को कला के द्वारा उजागर करते आए हैं और भविष्य में करना चाहेंगे। क्या हम भावसिंह के काम से प्रेरित होकर कला के मायने फैलाएँगे? और कला के चाहने वालों में उनको भी शामिल करेंगे जिन्हें कला की दुनिया नज़रअन्दाज़ करती आई है?

खेल गीत

ये ऐसे खेल गीत हैं जो शहरो में बच्चे खेलते-गाते हैं या उन्हें गाते-खेलते हैं। ऐसे गीत बचपन के बाद गुम होते चले जाते हैं – इतने कि भूमिगत हो जाते हैं। हमने इन्हें खोदकर निकाला है।

अंकुर, पिछले चौंतीस सालों से शिक्षा के क्षेत्र में संवाद और रियाज़ के ज़रिए लगातार सक्रिय है। हमारे प्रयोग के ये ठिकाने दिल्ली के पाँच कामगार इलाकों में चलते हैं। यहाँ बच्चे-बच्चियाँ और किशोर-किशोरियाँ सुनने-बोलने-लिखने और पढ़ने का आनन्द उठाते हैं। साथ ही मीडिया के तमाम रूपों के ज़रिए अपने अनुभवों को ज़ुबान देते हैं।

संग्रहकर्ता – कुलविन्दर कौर

संवादक – अंकुर

चित्र: वसुन्धरा अरोरा

अंकुर लर्निंग कलेक्टिव के कलमकारों का संग्रह
(कलमकारों की उम्र 8 से 10 साल)